धन पाने वालों के लिये धर्म क्यों?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

संसार में जीवन चलाने के लिये धन का बहुत महत्व है। बिना धन के जीवन यापन करना बहुत कठिन है। धनार्जन धर्म पूर्वक होना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अनैतिक आचरण से धन का अर्जन करता है तो वह धन अधिक दिनों तक नहीं टिक पाता। किसी न किसी रूप में वह धन खर्च होता रहता है। बीमारी के माध्यम से अथवा कभी किसी दुर्घटना के माध्यम से अथवा आयकर अधिकारियों के द्वारा छापा मारकर वह धन निकल जाता है। इसलिए परिश्रम पूर्वक अर्जित धन उन्नति में सहायक होता है। धनार्जन पुरुषार्थ से करना चाहिए।

जीवन में चार पुरुषार्थ माने गये हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। पुरूषार्थ दो शब्दों से मिलकर बना है– पुरुष तथा अर्थ। पुरुष का अर्थ है विवेकशील प्राणी तथा अर्थ का तात्पर्य है लक्ष्य। अतः पुरुषार्थ का अर्थ है विवेकशील प्राणी का लक्ष्य। इस अर्थ में पुरुषार्थ एकओर सांसारिक लक्ष्य, पारलौकिक लक्ष्य और कर्त्तव्य है तथा दूसरी ओर इसमें नैतिकता आर्थिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को संतुलित किया गया है। पुरुषार्थ के अंतर्गत मनुष्य भौतिक सुखों को उपभोग करते हुए धर्म का भी समान रूप से अनुसरण करके मोक्ष का अधिकारी होता है। मोक्ष भारतीय जीवन का परम लक्ष्य है। इसी की प्राप्ति ही जीवन का उद्देश्य है।

अपने परिवार का भरण–पोषण, लालन–पालन सभी लोग करते हैं, किन्तु जब किसी दूसरे जरूरतमंद लोगों का उपकार किया जाये तो वही सच्चा धर्म है। चिकित्सा, शिक्षा, रोटी, कपड़ा, मकान मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता है। इसकी पूर्ति करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। आवश्यकता से अधिक अर्जन करना अधर्म है। जो व्यक्ति जितना समर्थ हो उतना यदि समाज को दे तो समाज का बहुत बड़ा कल्याण हो सकता है। धनी व्यक्ति में सेवाभावना का गुण होना चाहिए। सेवाभावना में अहंकार नहीं होना चाहिए, क्योंकि अहंकार मनुष्य को पतन के गर्त में गिरा देता है।

शहरों में जगह–जगह मन्दिरों, सार्वजनिक स्थानों, मेला क्षेत्रों आदि स्थानों पर लंगर की व्यवस्था रहती है, जहॉ पर लोग खाना खाकर अपनी भूख शान्त करते हैं। संसार में बहुत से परोपकारी जीव हैं जो शीत से रक्षा करने के लिए लोगों में कम्बल, स्वीटर और ऊनी बस्त्रों का वितरण कर सेवा में सहभागी होते हैं। दीन–दुखियों की सहायता करना, उनका सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे देश में बहुतसी संस्थाएं गरीबों, असहायों निर्बलों, आर्थिक एवं सामाजिकरुप से पिछड़ों को आर्थिक सहायता देकर उन्हें सम्मान प्रदान कर रही हैं। ग्रीष्म ऋतु में पशुओं, पक्षियों को जल पिलाना भी एक प्रकार की सेवा है। जगह–जगह पानी से भरे हुए पात्र को छाया में रख देना चाहिए, जिससे प्यासे पशु, पक्षी पानी पी सकें। इसी प्रकार जंगलों और वनों में भी पशुओ के खान–पान की व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे उनकी प्राण रक्षा हो सके। इस प्रकार सेवाधर्म बहुत ही पवित्र कार्य है। धन प्राप्त करने वालों को धर्म में धन का व्यय करना चाहिए।

धर्म शब्द का अर्थ धारण करना है। धर्म प्रजा को धारण करता है। धर्म मानव को कर्त्तव्यों सतकर्मों एवं गुणों की ओर ले जाता है। धर्म व्यक्ति की विविध रूचियों, इच्छाओं, आकांक्षाओं, आवश्यकताओं आदि के बीच संतुलन बनाये रखता है। सदाचार को धर्म का लक्षण माना गया है। सदाचार ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है। धर्म वही है जो किसी को कष्ट नहीं देता अपितु लोककल्याण करता है। धर्म का ही आश्रय ग्रहण करके व्यक्ति इस संसार में तथा परलोक में शांति प्राप्त करता है जो व्यक्ति धर्म का सम्मान करता है, धर्म उसकी सदैव रक्षा करता है। शरीर नष्ट हो जाने पर सबकुछ छूट जाता है। किन्तु धर्म जीव के साथ जाता है।

धर्म को साक्षात् ईश्वर का स्वरूप माना गया है। तप, शौच, दया और सत्य धर्म के चार अंग है। धर्म का संबंध मनुष्य के अंतःकरण से होता है। दूसरा महत्वपूर्ण पुरुषार्थ अर्थ है। जिस प्रकार आत्मा के लिए मोक्ष बुद्धि के धर्म और मन के लिए काम की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार शरीर के लिए अर्थ की आवश्यकता है। अर्थ के अभाव में जीवन चलाना बहुत कठिन हो जाता है। इसीलिए धन को भी पुरूषार्थ में स्थान देकर इसे उचित मानवीय आकांक्षा माना गया है। पंचमहायज्ञों को सम्पन्न करने के लिये भी अर्थ के महत्व को स्वीकार किया गया है। मोक्ष प्राप्त के लिए भी अर्थ जरूरी है। अर्थ सम्पन्न व्यक्ति के पास मित्र, विद्या, गुण क्या नहीं

होता? धन में सभी गुण समाहित हो जाते हैं। यदि अर्थ धर्म का विरोधी हो तो उसे त्याग देना चाहिए। अर्थसंचय धार्मिक आधार पर होना चाहिए। अधार्मिकता से अर्जित धन को दुःखद और निंदनीय कहा गया है। तीसरा महत्वपूर्ण पुरुषार्थ काम है। काम का मुख्य उद्देश्य संतानोत्पत्ति तथा वंशवृद्धि करना है। काम का सर्वोत्तम और आध्यात्मिक उद्देश्य पति–पत्नि में आध्यात्मिकता, मानवप्रेम, परोपकार तथा सहयोग की भावनाओं का विकास करना होता है। अंतिम और महत्वपूर्ण पुरुषार्थ मोक्ष है। मानव देवऋण, ऋषिऋण, पितृऋण को पूरा करके मोक्ष में मन लगाये। मोक्ष की प्राप्ति के लिए धार्मिक अनुष्ठान करें, तब मोक्ष को प्राप्त करें।